कविता

राहें

अंशुमन दुबे*

जीवन पथ के उतार-चढ़ाव,
होते बड़े अजीब हैं।
कभी फ़ासले दिखाई देते हैं,
कभी लगता बस करीब हैं।

अनजान राहों पर चलने को
दिल में बस एक आस चाहिए।
मंजिल को भी पा जाएँगे,
खुद पर बस विश्वास चाहिए।

हौसला बढ़ाने संघर्ष पथ पर,
इस धरा का सौंदर्य साथ है।
दिन ढल जाए तो चिंता नहीं,
चाँद-सितारे तो साथ हैं।

अंधेरे में तू कहीं डर ना जाना,
रात बीत जाएगी, ढलते-ढलते।
लड़खड़ाने से मत घबराना,
वक्त लगता है संभलते-संभलते।

© NCERT not to be republished

*स्वर्गीय लेखन *छोटी सी उमर 104,* रेडियो कॉलोनी, इन्द्रौर- 452001, मध्य प्रदेश